RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 72 अंक : 34
सृष्टि संवत् 1960853116
22 नवम्बर 2015
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रु.
आजीवन : 1000 रु.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–72, अंक : 34, 19/22 नवम्बर 2015 तदनुसार 7 मार्गशीर्ष सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

कहां भगवान् ? किसने उसे देखा ?

-ले० श्री स्वामी वेदानंद जी (दयानन्द) तीर्थ

प्र सु स्तोमं भरत वाजयन्त इन्द्राय सत्यं यदि सत्यमस्ति।
नेन्द्रो अस्तीति नेम उ त्व आह क ईं ददर्श कमभि ष्टवाम।।
अयमस्मि जरितः पश्य मेह विश्वा जातान्यभ्यस्मि महा।
ऋतस्य मा प्रदिशो वर्धयन्त्यादर्दिरो भुवना दर्दरीमि।।

-ऋ० ८।१००।३-४

शब्दार्थ-**यदि**-यदि **सत्यम्**-सचमुच **अस्ति**-भगवान् है तो **वाजयन्तः**-ज्ञानाभिलाषी, बलाभिलाषी होते हुए तुम उस **इन्द्राय**-इन्द्र के लिए **सत्यम्**-सच्चा **स्तोतम्**-स्तोत्र **प्र**-अत्यन्त **सु**-उत्तम रीति से **भरत**-धारण करो **नेमः+त्वः+उ+आह**-कोई एक तो कहता है-इन्द्रः-इन्द्र **न+अस्ति+इति**-नहीं है। **ईम्**-उसको **कः**-किसने **ददर्श**-देखा है ? **कम्**-किसकी **अभि+स्तवाम्**-हम स्तुति करें ?

भगवान् इसका समाधान करते हैं-हे **जरितः**-स्तोतः! **अयम्+अस्मि**-यह मैं हूं, **मा**-मुझे **इह**-यहीं **पश्य**-देख। मैं **महा**-महत्त्व के कारण **विश्वा**-सम्पूर्ण **जातानि**-उत्पन्न पदार्थों को **अभि+अस्मि**-अभिभूत करता हूं **ऋतस्य**-ऋत के **प्रदिशः**-उपदेशक **मा**-मेरी **वर्धयन्ति**-बड़ाई करते हैं। मैं **आदर्दिरः**-विदीर्ण करने वाला, विनाश करने वाला **भुवना**-संसारों को **दर्दरीमि**-पुनः पुनः विनाश करता हूं।

व्याख्या-यदि तुम्हें भगवान् पर आस्था है तो उसकी सच्ची, हृदय के अन्तस्थल से निकली हुई स्तुति करो। तुम्हारी स्तुति से भगवान् को कोई लाभ नहीं, तुम्हें ही लाभ है, किन्तु किसी ने संशय डाल दिया कि क्या परमेश्वर-परमेश्वर चिल्ला रहे हो ? वह है ही नहीं। जब वह है ही नहीं तो-'**कमभिष्टवाम**'-किसकी स्तुति करें ? उसे '**क ईं ददर्श**'-किसने देखा है ? लाखों इन्द्रियागोचर पदार्थों को मानकर दिन-रात अपना कार्य चलाने वाला कहता है-'क ईं ददर्श कमभिष्टवाम' उसे किसने देखा है ? किसकी स्तुति करें ? योग के विघ्नों में '**संशय**' बड़ा भारी विघ्न है। जैसा योगासूत्र है-'**व्याधिस्त्यानसंशय....**' (१।३०) व्याधि-रोग, स्तयान-भारीपन, संशय, प्रमाद, आलस्य, अविरति-योगसाधनों में प्रीति का न होना, भ्रान्तिदर्शन, योगभूमि का प्राप्त न होना, चित्त की चंचलता, ये योग के विघ्न हैं। संशय में पड़कर अपनी पूजापद्धति को तिलान्जलि देने को भक्त तैयार हुआ कि आत्मा के अन्दर बैठा आत्मा का आत्मा, अन्तरात्मा परमात्मा कहता है-'**अयमस्मि जरितः**'-भक्त! यह मैं हूं। तू मुझे खोजता है, देख नहीं पाता है। मत इधर-उधर भटक, वरन् '**पश्य मेह**'-मुझे यहीं देख। अन्यत्र जाने की आवश्यकता नहीं है। मैं तो तेरा अन्तर्यामी आत्मा हूं। तेरे आत्मा के अन्दर बैठा हूं। बाहर की ओर से आंख मूंद, अन्दर की खोल। फिर तू मुझे अपने में देखेगा। मेरा सामर्थ्य जानना चाहता है ? मैंने-'**विश्वा जातान्यभ्यस्मि महा**' अपने बल-सामर्थ्य से समस्त संसार को दबा रखा है। समस्त जगत् मेरे संकेत पर चलता है। तू चाहे मेरी पूजा कर या न कर, किन्तु '**ऋतस्य मा प्रदिशो वर्धयन्ति**'-ऋत के-अबाध्य सृष्टि नियम के उपदेशक मेरी बढ़ाई करते हैं।

मूर्ख भले ही भगवान् का चिन्तन-स्मरण-ध्यान न करें, किन्तु जो कार्यकारणरूप ऋत के प्रचारक हैं, वे देखते हैं कि कारण बिना कार्य नहीं हो सकता। कारणों में यदि कर्त्ता न हो तो कार्य की उत्पत्ति किसी भांति नहीं हो सकती। छोटा-सा पदार्थ चेतन के बिना नहीं बन सकता तो इतना महान् जहान चेतनावान् के बिना कैसे बन सकता है ? इस ऋत को समझ कर वे तो भगवान् की पूजा करते हैं और लोगों से भी कहते हैं-'**प्र व इन्द्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चत**' (ऋ० ८/८९।३) तुम अपने बड़े इन्द्र की वेद से पूजा करो। भगवान् की शक्ति उत्पादक शक्ति प्रत्यक्ष नहीं है। उसका अनुमान से ज्ञान होता है। उसकी पालन शक्ति भी व्यक्त नहीं है। उसका भान भी अनुमान प्रमाण कराता है, परन्तु जब विनाश देखते हैं तो चुपचाप किसी महती शक्ति की भक्ति करने पर तत्पर हो जाते हैं। भगवान् का आदेश है-'**आदर्दिरो भुवना दर्दरीमि**' मैं प्रलयङ्कर बार-बार संसार का संहार करता हूं। संहार देखकर डरकर यदि संहारक के पास मनुष्य जाएगा तो उसे पालक के रूप में पाएगा। लौकिक संहारक और उसमें यह महान् अन्तर है। लौकिक संहारक संहार ही संहार करने में तत्पर है। जलप्लावन के कारण ग्राम-नगर डूब रहे हैं। उसके पास कोई जाए तो वह उसे भी बहा ले जाएगा। किसी कारण जंगल में आग लग गई है, उसमें जो जाएगा, जल जाएगा, यदि जलेगा नहीं तो झुलस अवश्य जाएगा। संसार-संहारक भगवान् के पास जाने पर उसका प्यार पाएगा, संहार को प्यार में परिवर्तित पाएगा। उसका संहार निर्माण के लिए है।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

एक या पांच

-ले० अभिमान्यु कुमार खुल्लर, सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखाधिकारी (केन्द्र)

सम्पादक लेखक के इन विचारों से पूर्णतया सहमत नहीं है। लेख की समीक्षा के लिए विद्वानों की टिप्पणीयां सादर आमन्त्रित हैं।
-सम्पादक आर्य मर्यादा

सामान्यत: लेख का शीर्षक पहिले ही मस्तिष्क में आ जाता है क्योंकि विचार तंत्री उस ओर ही घूमी हुई होती है। उसे ही लिख देता हूँ। संशोधन की आवश्यकता कम ही पड़ी हैं, पर महाभारत के जिस पात्र के बारे में एक लेख 'माम विवस्त्रा कुरू मा' लिख चुका हूँ। वह पात्र अभी भी चुम्बकीय शक्ति से मुझे जकड़े हुए है। उसी के विषय में पुन: एक लेख लिखते हुए, शीर्षक देने में थोड़ा रूकना चाहता हूँ।

ब्राह्मणवेशधारी अर्जुन ने अभी लक्ष्यभेद नहीं किया था। स्वयंवर सभा में कृष्णा ने प्रवेश ही किया था कि उसके सौन्दर्य का मादक नशा युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल व सहदेव के अतिरिक्त, दुर्योधन, दु:शासन, कर्ण, विकर्ण, शिशुपाल, जरासंध, शल्य आदि सबको आहत कर चुका था। जिस कृष्णा-पांचाल नरेश की पुत्री द्रौपदी के सौन्दर्य की चर्चा सम्पूर्ण भारत में थी, वह यौवनरस से भरपूर, अद्वितीय कमनीय देहयनिष्ठ, कमल-पंखुडियों सदृश नयनों वाली, घुटने तक स्पर्श करने वाले घुंघराले बालों वाली स्वयं उनके समक्ष उपस्थित थी। ऐसा लगता था जैसे कामदेव की समस्त कलाएं उसमें समा गई थी। घायल हुए, आहत हुए कोई नहीं बचा। न पांडव, न कौरव और नहीं कोई अन्य नर पुंगव।

कृष्णा के भाई धृष्टद्युम्न ने घोषणा की-जो नर श्रेष्ठ चक्र में घूमती हुई मछली की आंख का लक्ष्य भेद कर पाएगा कृष्णा उसी को परिवरण करेगी। एक एक राजा लक्ष्य भेद के लिये आते गए और असफल होकर हताश बैठते गए। कर्ण लक्ष्य भेद के लिये आगे बढ़ा, अभी धनुष के लिये हाथ ही बढ़ाया था कि कृष्णा की चीत्कार वायुमंडल में गूंज गई-'नाहं वरियामि सूतम्'-सूत का वरण नहीं करूंगी। अपमानित कर्ण अपने स्थान पर जाकर बैठ गया। पांडवों का अता-पता नहीं था। लाक्षागृह में उनके भस्म हो जाने की कथा सर्वत्र फैल चुकी थीं। लक्ष्य भेद होगा भी या नहीं, संशय की स्थिति बन गई थी। सभी राजा तो पराजित हो चुके थे।

ब्राह्मण दल से एक भिक्षोपजीवी ब्राह्मण उठ कर रंगमंच की ओर अग्रसर हुआ। महाराज द्रुपद के समीप पहुंच कर प्रतियोगिता में भाग लेने की अनुमति मांगी। अनुमति मिलते ही वह धनुष तीरों की तरफ बढ़ा। पलक झपकते ही उसने लक्ष्य भेद कर दिया। कृष्णा ने नि:संकोच प्रत्युत अत्यन्त उल्लासपूर्वक जयमाला, वरमाला उसके गले में हाल दी। वह ब्राह्मण विश्व का अन्यतम् धनुर्धर सव्यसाची अर्जुन होगा, इसकी कल्पना भी असंभव थी। महाराज द्रुपद और धृष्टद्युम्न को लगा कृष्णा का स्वयंवर उनकी मनोकामना पूरी करने के स्थान पर दारूण चिंता का कारण बन गया। भिक्षोपजीवी ब्राह्मण के साथ राजलक्ष्मी कृष्णा कैसे निर्वाह कर पाएगी ?

पूर्णयौवन प्राप्त पाँच बेटों की माँ कुन्ती का असमंजस में पड़ना स्वाभाविक था। वह खूब अच्छी तरह जानती थी कि यौवन में काम का ज्वार कितना तीव्र होता है। कौमार्य अवस्था में वह स्वयं कर्ण को जन्म दे चुकी थी। भीम भी हिडिम्बा के साथ अल्पकालीन वैवाहिक जीवन के पश्चात् घटोत्कच को जन्म देकर परिवार के पास लौट आया। पाँचों में श्रेष्ठ धनुर्धर अर्जुन ही था जो स्वयंवर में भाग ले सकता था। ऊपरवाले दो भाई और नीचे वाले दो भाई प्रतियोगिता में भाग ही नहीं ले सकते थे और यदि लेते भी तो उनको उतनी ही भीषण पराजय मिलनी थी जितनी अन्य नरेशों को मिली थी।

और अब प्रतियोगिता जीतकर अर्जुन कृष्णा को घर ले आया था। इन सभी के नेत्रों में कृष्णा के लिये अनुराग-आसक्ति का भाव समझ लेना कुन्ती के लिये असंभव नहीं था। (डॉ० सातवेवलेकर ने यह दायित्व युधिष्ठिर को दिया है जो स्वयं कृष्णा पर आसक्त था, इसलिये मुझे स्वीकार्य नहीं है) यह आसक्ति पारिवारिक विग्रह का कारण बन सकती है, इसीलिये कुन्ती ने तय किया कि येनकेन प्रकारेण अर्जुन के मन में द्रौपदी के लिये एकमात्र अधिकार को द्रवीभूत करना होगा।

पाण्डव सुसंस्कारित थे। उनके मन में अग्रजों के लिये आदर और छोटों के लिये स्नेह घुट्टी में मिला हुआ था। अर्जुन को बरगलाया जा सकता था कि यदि उसने कृष्णा से विवाह किया तो दोनों बड़े भाईयों के विवाहित न होने के कारण सामाजिक लांक्षना मिलेगी। इसे परिवेदन कहा जाता है और परिवेदन पाप है और यह वेद विरूद्ध भी है। यह पाप पूरे परिवार को झेलना पड़ेगा। कन्यादान व्यक्ति विशेष को नहीं पूरे परिवार को मिलता है। अर्जुन पर माँ के कथन का सार्थक असर पड़ा। परिवार में विग्रह का कारण उसका द्रौपदी के लिये न्यायोचित, स्वाभाविक आकर्षण भी नहीं बनना चाहिये। इसलिये वह तटस्थ हो गया, मौन हो गया। द्रौपदी की दृष्टि से उसका यह अनासक्त भाव छिपा न रह सका। दिल की बात दिल ही में रह गई। तीनों ही तर्क तत्कालीन सामाजिक संदर्भों में भी कितने लचर और अर्थहीन थे।

डॉ० सातवेलकर ने हिडिम्बा को अत्यन्त सुन्दरी बताया और कुन्ती ने भीम से उसके विवाह की अनुमति दी थी, अंकित किया है। परिवर्तित परिस्थिति में यहाँ कुन्ती ने भीम का हिडिम्बा से विवाह स्वीकार ही नहीं किया। उसे हिडिम्बा का कामतृप्ति का आधार माना। यह भी कितना मोथरा तर्क था। वनवासी, स्वच्छन्द परिवेश में पत्नी-बढ़ी युवती नगरीय परिवेश में आना ही स्वीकार नहीं करती तो उसे कामपीड़िता घोषित कर, परिवार से छेक दो।

परिवार में जिस मोर्चे को कुन्ती ने सम्भाला था, द्रुपद और धृष्टद्युम्न के सामने उसी मोर्चे को श्रीकृष्ण और वेदव्यास जी ने सम्भाला। दोनों के कारण अलग-अलग थे पर हल एक ही निकलता था। ये दोनों ही आशंकित थे कि कृष्णा भाईयों में विग्रह का कारण बन सकती है। ऐसी स्थिति में दुर्योधन-चौकड़ी को इनका सर्वनाश करने में सुगमता हो जावेगी। इसके विपरीत यदि पांचों पांडवों का विवाह कृष्णा के साथ कर दिया जावे तो पांडवों की शक्ति बिखरने के बजाय ज्यादा घनीभूत हो जावेगी क्योंकि कृष्णा रूप और बुद्धि की खान है। उनमें फूट कभी नहीं होने देगी।

इसके अतिरिक्त कृष्ण का स्वप्न-अत्याचारी शासकों का विनाश और धर्म की स्थापना में व्यवधान उपस्थित हो सकता है। पारिवारिक विग्रह में उलझे होने के कारण पांडव एक जुट नहीं रह पाएंगे। पांडवों की सम्पूर्ण शक्ति और पांचालों की, मित्रों सगे-सम्बंधियों सहित शक्ति, उनके (श्रीकृष्ण) उद्देश्य की पूर्ति के लिये आवश्यक नहीं, अपरिहार्य है। द्रुपद और धृष्टद्युम्न ने पांचों पाण्डवों से द्रौपदी के विवाह को आसानी से स्वीकार नहीं किया। पांचालों में प्रचलित बहुपतित्व प्रथा का उदाहरण देने पर द्रुपद ने कहा कि उनका परिवार इस प्रथा को बहुत पहिले ही छोड़ चुका है। उन्होंने आशंका व्यक्त की कि अन्य नरेश उनकी कन्या पर लांछन लगाएंगे। कृष्ण और वेदव्यास जी ने विशेष परिस्थितियों में बहुपतित्व प्रथा और शास्त्रों का उदाहरण देकर उन्हें आश्वस्त किया। द्रुपद ने अपनी सहमति प्रदान कर दी।

सबसे पीड़ादायक कृष्णा और अर्जुन की नैसर्गिक प्रबल, निष्पाप, निष्कलुश भावनाओं का दमन, पारिवारिक सुख-शान्ति और कृष्ण के स्वप्न की पूर्ति में सहायक होने के नाम पर। अर्जुन और कृष्णा के समान रूप से सखा होने पर भी उनकी भावनाओं का आदर करने या प्रश्रय देने के स्थान पर समग्र पांडवों का हित साधन और अपने लक्ष्य की पूर्ति श्रीकृष्ण के लिये ज्यादा महत्वपूर्ण थी। व्यक्तिगत सम्बन्ध उनके लिये गौण थे। श्रीकृष्ण और वेदव्यास जी के परामर्श, पांडवों की अभिरूचि, मां कुन्ती की सहमति, तथा स्वयं कृष्णा की स्पष्ट अनापत्ति को मानकर महाराज द्रुपद और युवराज धृष्टाद्युम्न पांचों पांडवों से कृष्णा के विवाह को सहमत हो गए।

कथानक के अत्यन्त महत्वपूर्ण पात्र होने के कारण द्रौपदी पात्र का मूल्यांकन करना भी उचित होगा। द्रौपदी को गौण कर देखिए-महाभारत का समस्त लालित्य समाप्त हो जाता है। द्रौपदी का समग्र सौन्दर्य और बुद्धिकौशल उसे विवस्त्रा, घसीट कर लाए बिना दुर्योधन, दु:शासन और कर्ण के अभिमान को, द्रुपद सभा में लगी मर्मान्तक पीड़ा को, शान्ति कैसे मिल सकती थी ? जबकि वे स्वयंवर के बाद से पल-पल मृत्युपीड़ा से बढ़कर अपमान की पीड़ा को, झेल रहे थे। मासिक स्त्राव से भोगी एक वस्त्र-पहिने, घसीटने के कारण वह वस्त्र भी गिर गया था।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

सम्पादकीय......

हमारा मन शुभ विचारों वाला हो

हमारा मन एक अद्भुत तथा विलक्षण शक्ति का केन्द्र है। मन की शक्ति के बिना शारीरिक शक्ति किसी ठोस तथा भारी कार्य का अवसर उपस्थित होकर हतोत्साह होकर बैठ जाती है। मन की शक्ति के द्वारा मनुष्य उत्साह से पूर्ण होकर कार्य करता है और सफलता को प्राप्त करता है।

मानव के बन्धन या मुक्ति की भावना सर्वथा मन पर ही आश्रित होती है। इधर वेद भी पुकार-पुकार कर कह रहा है-**तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।** हे भगवन्, मेरे मन के संकल्प सदा ही मंगलमय तथा शुभ रूप हों। संस्कृत साहित्य के हर्षचरित में महाराज हर्षवर्धन कहते हैं विजेता वही हो सकता है जो समुद्र को नदी, नदी को नहर तथा हिमालय को एक छोटी सी पर्वत श्रेणी की तरह सुगम तथा लंघनीय समझे। मनुष्य की हार और जीत मन के कारण तय होती है। मन के द्वारा मनुष्य सफलता की बुलन्दियों को छू सकता है तो उसी प्रकार मन की दुर्बलता के कारण पतन की ओर अग्रसर होता है। मनुष्य अपने दृढ़ संकल्पों के द्वारा मृत्यु पर भी विजय पा सकता है।

आयुर्वेद के महान् ज्ञाता चरक दो प्रकार की व्याधि मानते हैं, शारीरिक तथा मानसिक-

द्विविधो जायते व्याधिः शारीरो मानसस्तथा।।

मिथ्या आहार विहार से जिस प्रकार शारीरि[illegible] उसी प्रकार विविध मानसिक कारणों से मानसि[illegible] है। दुर्बल मन के रोगी छोटी सी शल्य क्रिया में ही अधीर हो बैठते हैं। प्राकृतिक दुर्बलता के अतिरिक्त आजकल की तीव्रगति सापेक्ष यात्राओं में विविध प्रकार की दुर्घटनाओं से तथा अन्य नशीले मादक पदार्थों के सेवन से भी विविध प्रकार की मानसिक दुर्बलताएं उत्पन्न हो जाती हैं, जिससे बलवान् वात-तन्तु भी धीरे-धीरे दुर्बल हो जाते हैं। ये असावधानियां तथा व्यसन मन को दुर्बल करके तरह-तरह के मानसिक रोग उत्पन्न कर देते हैं। वियोग, शोक, चिन्ता, क्षोभ, कलह, वैमनस्य, अतिपरिश्रम, दीर्घकालीन महारोग, असफलता, धन-हानि, आदि से भी मन रूग्ण हो जाता है।

प्रकृति के विचार से मन मुख्य रूपेण तीन प्रकार का माना गया है, सत्व-प्रधान, रज:प्रधान, तमः-प्रधान। यह सर्वथा सत्य है कि प्रत्येक मन युग-युगान्तरों से संस्कार लेकर संसार में आता है। सत्वगुण प्रधान मन जितात्मा, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान, ईर्ष्या से शून्य, स्वाध्यायशील, कर्त्तव्यपरायण, उच्चविचार, उच्च लक्ष्य, तथा उच्च संकल्पों की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है। रज:प्रधान मन उच्च लक्ष्य का इच्छुक परन्तु स्वार्थपर, कामादि की प्रेरणा से कभी-कभी विचलित होने वाला, स्वार्थ-वृत्ति तथा ऐश्वर्यभोगी होता है। परन्तु तामस मन अत्यन्त स्वार्थ साधक, नीच वृत्ति, नीच कर्म, कर्त्तव्याकर्त्तव्य भावना से सर्वथा शून्य तथा प्रत्येक कार्य में सर्वथा स्वार्थी होता है।

मन के थोड़े अंश में विकृत हो जाने पर मानव सर्वथा पथ भ्रष्ट हो जाता है। कर्त्तव्य तथा अकर्त्तव्य में भेद नहीं समझ सकता। अधिक विकृत हो जाने पर रोगी का जीवन ही भारभूत बन जाता है। वह स्वयं कभी-कभी इतना उद्विग्न हो जाता है कि वह संसार में बन्धु-बान्धवों से, इष्ट मित्रों से तथा उनके सम्पर्क में आने वाले सभी सज्जनों से निज सम्बन्ध तोड़कर सर्वथा एकाकी होकर संसार से मानो रूठ कर बैठ जाता है। कभी कभी वह एकान्तप्रिय बन जाता है और कभी- कभी अपने जीवन को अन्धकारमय समझ कर आत्महत्या का विचार भी करने लगता है। देखिए मन की दुर्बलता मनुष्य को कहां से कहां ले जाती है।

मनुष्य के पास सभी प्रकार के सुख के साधनों के होने पर भी मन की विकृति के कारण सदा ही अप्रसन्न, असन्तुष्ट, तथा अशान्त होकर भटकता रहता है। मन की विकृति मानव की चेष्टाओं में भी विचित्र परिवर्तन कर देती है। कुछ विचारक सत्त्व अर्थात् धैर्य को मन का गुण मानकर मन को मुख्यतः तीन प्रकारों में विभक्त करते हैं, प्रवरसत्त्व, मध्यम सत्त्व तथा हीन सत्त्व। प्रवरसत्त्व वे हैं जो संपत्ति तथा विपत्ति को एक समान समझते हैं। न वे संपत्ति में परम उद्धत तथा अतिगर्वित हो उठते हैं और न विपत्ति में दीन-हीन होते हैं। हीन सत्त्व संपत्ति में तो आकाश पाताल एक कर देते हैं और अभिमान में आकर दूसरों का निरादर कर देते हैं परन्तु जरा सी विपत्ति आने पर दुखी हो उठते हैं और आत्महत्या करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

भारतीय चिकित्सक शिरोमणि चरक जिनके विषय में बहुत से पाश्चात्य वैज्ञानिक कहते हैं कि इन जैसा प्रयोगवादी चिकित्सक संसार भर में नहीं हुआ है, वे लिखते हैं कि काम, क्रोध, मोह, ईर्ष्या, मान शोक, चिन्ता, उद्वेग, भय, हर्ष ये मनोविकार हैं, जो व्यक्ति इनको जीत ले, वह मृत्यु को भी जीत सकता है। मन की दुर्बलता के कारण व्यक्ति इन विकारों से ग्रसित होता है। अभ्यास के द्वारा ही मनुष्य इन विकारों पर नियन्त्रण कर सकता है। गीता में भी श्रीकृष्ण जी कहते हैं कि-

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते:

अर्थात् लगातार अभ्यास करने से तथा वैराग्य की भावनाओं द्वारा इस मन को संसा[illegible] बन्धनों से मुक्त करके अपने वश में किया जा सकता है। अभ्यास तथा वैराग्य की अतुल शक्ति का अनुमान लगाना अत्यन्त [illegible] है। संक्षेप में मन की दुर्बलता से बचने के लिए मनरूपी घोड़ों को [illegible]दम्य आत्मशक्ति द्वारा पूरे नियन्त्रण में रखो। इस मनरूपी घोड़े का दमन बड़ी भारी आध्यात्मिक विजय है। मन को नियन्त्रण में रखने से मनुष्य अपनी इन्द्रियों को अपने वश में रख सकता है। मन की दुर्बलता के कारण ही इन्द्रियां विषयों की ओर उन्मुख होती हैं। शिवसंकल्प सूक्त के छः मन्त्रों में मन के इसी स्वरूप का वर्णन किया गया है कि जो मन जागते हुए दूर-दूर तक जाता है वहीं मन सोते हुए भी कल्पना के सागर में खो जाता है। प्रकाश से भी अधिक गतिशील इस मन को मनुष्य अपने विवेक से तथा दृढ़ संकल्पों से वश में कर सकता है। जिस मन के द्वारा सत्कर्मनिष्ठ ध्यान करने वाले बुद्धिमान लोग इष्टकर्मों को करते हैं, जो बुद्धि का उत्पादक और स्मृति का साधन, धैर्यस्वरूप है और मनुष्यों के भीतर नाशरहित प्रकाशरवरूप है, जिसके बिना कोई भी कर्म नहीं किया जाता, इस प्रकार के मन को मनुष्य वैसे वश में कर सकता है जैसे अच्छा सारथि घोड़ों को लगाम के द्वारा इधर-उधर ले जाता है। मनुष्य को अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए मन की साधना करना अत्यन्त आवश्यक है। जो मनुष्य अपने मन को जीत लेता है, मन के उपर अपना अधिकार कर लेता है वह संसार में कठिन से कठिन परिस्थितियों का भी समाधान निकाल लेता है और जिस मनुष्य का अपने मन के उपर अधिकार नहीं होता वह विपत्तियों के आने पर घबरा जाता है और मन की दुर्बलता के कारण आत्महत्या करने के लिए तैयार हो जाता है। इसलिए हमें इन शिवसंकल्प सूक्त के मन्त्रों का सोते समय [illegible] करना चाहिए जिससे इस मन में कभी भी सोते हुए, जागते हुए कुविचार न आएं और हम शुभ संकल्पों को धारण करते हुए निरन्तर उन्नति के पथ पर अग्रसर रहें।

-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री

वार्षिक उत्सव की सूचना

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिक उत्सव 26 नवम्बर 2015 से 29 नवम्बर 2015 तक बड़े उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है जिसमें मंगल यज्ञ होगा। यज्ञ के ब्रह्मा बाल कृष्ण शास्त्री पुरोहित आर्य समाज होंगे। आर्य जगत के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री जी मुम्बई के उत्तम प्रवचन एवं पं. सुखपाल आर्य जी सहारनपुर के मनोहर भजन होंगे। कार्यक्रम प्रातः 7:30 से 9:30 और रात्रि 7:00 से 9:00 बजे तक चलेगा। समापन समारोह 29 नवम्बर 2015 रविवार प्रातः 8:30 से 12:30 बजे तक होगा। आप सभी परिवार सहित सादर आमन्त्रित हैं।

-अनिल कुमार महामन्त्री आर्य समाज

विश्व महर्षि का ऋणी हैं

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला रोड, देहरादून

मनुष्य को यदि अपना परिचय जानना हो तो वह वेद व वैदिक साहित्य में ही मिलता है। परिचय से हमारा तात्पर्य मनुष्य वस्तुत: क्या है, इसका सत्य ज्ञान का होना ही मनुष्य का परिचय है। महर्षि दयानन्द जी ने मनुष्य की परिभाषा करते हुए बताया है कि जो मननशील हो और स्व-आत्मवत अर्थात् जैसे मुझे सुख प्रिय व दुख अप्रिय है इसी प्रकार से अपने हानि व लाभ की तरह दूसरों के सुख द:ख व हानि लाभ को समझता हो। यदि इतना ही जान लिया जाये और इसी पर आचरण किया जाये मनुष्य एक श्रेष्ठ मनुष्य बन सकता है। सभी मनुष्यों में कमी यह देखी जाती है कि वह अपने सुख व दु:ख को ही अपना मानते हैं दूसरों के सुख व दु:ख की परवाह नहीं करते और इस कारण हम कई बार दूसरों के सुखों की हानि व दु:खों की वृद्धि कर बैठते हैं। अत: हमें मनशील होना चाहिये और इसके लिए आवश्यक है कि हम सदग्रन्थों का नियमित स्वाध्याय व अध्ययन करें। इससे हमें सत्य और असत्य का ज्ञान होगा जिससे सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में हमें सहायता मिलेगी। जिस प्रकार से ज्ञानहीन मनुष्य पशु के समान होता है इसी प्रकार वेदादि सद्ग्रन्थों के अध्ययन से शून्य मनुष्य भी पशु के समान ही होता है।

आज से लगभग 140 वर्ष पूर्व न केवल भारत देश अपितु सारा विश्व ही अज्ञान व अन्धविश्वासों से भरा हुआ था। शायद ही तब किसी को अपवाद स्वरूप पता रहा हो कि ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति का स्वरूप क्या है ? मनुष्य का ईश्वर, अपने प्रति और संसार व समाज के प्रति कर्तव्य क्या हैं ? यदि मनुष्यों को यह पता होता तो संसार में अन्याय, शोषण, पक्षपात, अभाव, रोग व शोक आदि न होते हैं। अज्ञान के कारण ही मनुष्य अपने कर्तव्यों के प्रति अनभिज्ञ व लापरवाह होता है, मिथ्या पूजा व उपासना प्रचलित होती है, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, गुरूडम, असत्य व मिथ्या ग्रन्थों का अध्ययन व उनकी मिथ्या शिक्षाओं का आचरण होता है। समाज में समरसता का स्थान विषमता लेती है और अज्ञान व अन्धविश्वासों के कारण ही लोग अपने स्वार्थों की पूर्ति व दूसरों के स्वाथों की हानि कर उनका शोषण व उन पर अन्याय करते हैं। इन बुराईयों को दूर करने के लिए ज्ञान की सर्वाधिक आवश्यकता है। ज्ञान के द्वारा ही अपने कर्तव्य व पदार्थों के सत्यस्वरूप को समझा जा सकता है व दूसरों को भी समझाया जा सकता है। इस पर भी यदि कोई सत्य का आचरण न करें तो दण्ड के द्वारा उसका सुधार कर उसे सत्य मार्ग पर लाना होता है। आज भी सभी देशों में न्यूनाधिक यही परम्परा व व्यवस्था चल रही है। कहीं यह अधिक प्रभावशाली व कारगर है और कहीं यह कमजोर व प्रभावहीन है। इसको प्रभावशाली बनाने के लिए इसकी व्यवस्था करने वाले राज्याधिकारियों व न्यायव्यवस्था से जुड़े हुए व्यक्तियों को पूर्ण सत्य का आग्रही व सत्याचरण के आदर्श को धारण करना होता है। जहां ऐसा होता है वहां व्यवस्था उतम होती है। महर्षि दयानन्द जी का जन्म आज से 190 वर्ष पूर्व सन् 12 फरवरी, सन् 1825 को गुजरात के मोरवी जिले के टंकारा नामक ग्राम में हुआ था। उनका किशोरावस्था का गुण उनका 'मननशील' होना था। यही कारण था कि जब पिता के कहते से

उन्होंने शिवरात्रि का व्रतोपवास किया तो रात्रि में शिवलिंग पर चूहों को विचरण करता देखकर उनको शिवलिंग में एक सर्वशक्तिमान व दैवीय शक्ति के होने के विश्वास को ठेस लगी और उन्होंने निन्द्रासीन अपने पिता को उठाकर उनसे अनेक प्रश्न किये ? पिता के पास उनके प्रश्नों का समाधान नहीं था, अत: उन्होंने उस व्रत को समाप्त कर दिया और सच्चे शिव को जानने का संकल्प लिया। कालान्तर में बहिन की मृत्यु होने पर उन्हें वैराग्य हो गया। अब मृत्यु से बचने और उस पर विजय पाने का एक और संकल्प उनके मन में उत्पन्न व धारण हो गया। जब तक माता पिता ने उन्हें अध्ययन करने की स्वतन्त्रता प्रदान की, वह घर रहे और अध्ययन करते रहे। जब उनके माता-पिता को उनके वैराग्य का ज्ञान हो गया और उन्होंने उनके विवाह का निश्चय कर दिया, तब उससे बचने के लिए और अपने संकल्पों को पूरा करने के लिए उन्होंने घर का त्याग कर देश भर में घूम-घूम कर ज्ञानी सत्पुरुषों, योगी, विद्वानों, महात्माओं और तपस्वियों की संगति की और उनसे जो भी ज्ञान प्राप्त हो सका या साधना का अभ्यास वह कर सकते थे, उसे उन्होंने जाना व प्राप्त किया। नर्मदा के तट व उसके उद्गम सहित वह उत्तराखण्ड के वन व पर्वतों के दुर्गम स्थानों में घूम-घूम कर वह वहां विद्वानों और तपस्वी योगियों की तलाश करते रहे। ऐसा करके वह योग व ज्ञान में अन्यों की अपेक्षा से कहीं अधिक ज्ञानी हो गये। जितना ज्ञान वह प्राप्त कर सके थे, उससे उनका सन्तोष व सन्तुष्टि नहीं हुई। अभी भी उन्हें एक ऐसे गुरु की तलाश थी जो उनकी सभी शंकाओं व संशयों को दूर कर सके। उनकी यह तलाश भी मथुरा में प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द सरस्वती को पाकर पूरी हुई जिनके सान्निध्य में लगभग 3 वर्ष रहकर उन्होंने अष्टाध्यायी-महाभाष्य-निरुक्त पद्धति से आर्ष व्याकरण, वेद व वेदादि साहित्य का अध्ययन किया। गुरु विरजानन्द ने उनकी सभी शंकाओं व संशयों की पूर्ण निवृति कर दी। योग विद्या में वह पहले से ही योग गुरु शिवानन्द पुरी व ज्वालानन्द गिरी की शिक्षाओं व अभ्यास से निपुण हो चुके थे। गुरु विराजनन्द जी से विद्याध्ययन पूरा कर सन् 1863 में उन्होंने उनकी प्रेरणा से धार्मिक व सामाजिक जगत में वेदों वा सत्य के प्रचार को अपने जीवन का मुख्य उद्देश्य बनाया। सन् 1863 से आरम्भ कर अक्तूबर, 1883 तक उन्होंने वेद एवं वैदिक मान्यताओं का प्रचार किया। इसके लिए उन्होंने असत्य, अज्ञान व अन्धविश्वासों का खण्डन किया और सभी धार्मिक व सामाजिक प्रश्नों के वेदों के आधार पर सत्य समाधान प्रस्तुत किये। उनके प्रसिद्ध कार्यों में सन् 186: में काशी में लगभग 30 विख्यात शीर्षस्थ पण्डितों से मूर्तिपूजा के वेदानुकूल होने पर शास्त्रार्थ था जिसमें प्रतिपक्षियों द्वारा मूर्तिपूजा वेदों के अनुकूल सिद्ध न की जा सकी। स्वामी जी ने वेदों के आधार पर मूर्तिपूजा सहित मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, बाल विवाह, सामाजिक विषमता वा जन्मना जाति-वर्ण व्यवस्था आदि का पुरजोर खण्डन किया। स्त्री व शूद्रों के लिए निषिद्ध वेदों के अध्ययन का उन्होंने उन्हें अधिकार दिया। मुम्बई में 10 अप्रैल, 1875 को वेदों के प्रचार व असत्य के शमन के लिए स्वामी जी ने आर्यसमाज तथा सन् 1883 को अजमेर में परोपकारिणी सभा की स्थापना की। संस्कृत की पाठशालायें खोलकर उन्होंने वेदों के अध्ययन को प्रवृत्त किया।

हिन्दी रक्षा व हिन्दी को सरकारी काम काज की भाषा बनाने के लिए हस्ताक्षर अभियान का श्री गणेश किया जिसे अंग्रेज़ सरकारी द्वारा नियुक्त हण्टर कमीशन को प्रस्तुत किया गया। सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, वेदभाष्य एवं अन्य सभी ग्रन्थ हिन्दी में लिखकर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। धर्म ग्रन्थ के रूप में सत्यार्थ प्रकाश तथा ईश्वरीय ज्ञान वेदों के भाष्य को हिन्दी में सर्वप्रथम प्रस्तुत करने का श्रेय उन्हीं को है। गोरक्षा व गोवध रोकने की दिशा में भी उन्होंने 'गोकरूणानिधि' पुस्तक लिखकर व अनेक राज्याधिकारियों से मिलकर इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य किया। गोहत्या व गोमांस सेवन को उन्होंने महापाप को संज्ञा दी और गोरक्षा को राष्ट्र की आर्थिक उन्नति का आधार सिद्ध किया। सत्यार्थ प्रकाश, आर्याभिविनय तथा वेदभाष्य में स्वराज्य व सुराज्य की चर्चा कर तथा धार्मिक व सामाजिक जागृति उत्पन्न कर देश की आजादी के आन्दोलन के लिए भूमि तैयार की। रामायण, महाभारतकालीन और उसके बाद के पूवजों के उत्कृष्ट देशहित के

कार्य करने के लिए उनको सम्मान व गौरव दिया। खण्डन-मण्डन, सभी मतों के ग्रन्थों का अध्ययन और समीक्षा, शास्त्रार्थ, वार्तालाप, उपदेश व प्रवचन द्वारा भी वैदिक सत्य मान्यताओं के प्रचार का ऐतिहासिक कार्य उन्होंने किया।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

पृष्ठ 2 का शेष-एक या पांच.....

पूर्णतया विवस्त्रा द्रौपदी का रूदन-क्रन्दन वह भी कौरवों की राजसभा में ? कितनी दारूण स्थिति थी।

इतनी विकट परिस्थिति में भी द्रौपदी के प्रखर प्रश्न ने सम्पूर्ण राजसभा को जिसमें सम्राट धृतराष्ट्र, साम्राज्ञी गांधारी, कौरव कुलभूषण भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य उपस्थित थे, सभी को विस्मयविमूढ़ ही नहीं किया निरूत्तर भी कर दिया। सभी सही उत्तर जानते थे कि हारा हुआ जुआरी पत्नि को दांव पर नहीं लगा सकता था क्योंकि पत्नि, पत्नि है, सम्पत्ति नहीं। पर राजसभा के उस विषाक्त वातावरण में जिसमें सम्राट स्वयं कि जितम् किं जितम कर रहे हों, अवश्यम्भावी अपमान से बचने के लिये अथवा स्वार्थ के वशीभूत वे मौन रहे। भीष्म का यह कथन कि राजा जो करता है, ठीक करता है, आग में घी डालना हुआ। उस पर तुर्रा यह कि वह अकेले युधिष्टिर की पत्नि नहीं सब भाईयों की पत्नि थी। यह बात दांव पर लगाने के शकुनी के प्रस्ताव में ही अर्न्तभूत थी और स्वीकृति देने वाला युधिष्टिर भी जानता था कि शकुनी क्या चाहता था।

श्रीकृष्ण को इस घटनाक्रम का कुछ पता नहीं था। वह तो बलराम के साथ शाल्व से युद्धरत थे। वनवास भुगतते हुए चारों भाईयों ने समस्त कथा सुना दी। कृष्णा की भीषणतम दुर्गति क्यों हुई, कुरूश्रेष्ठों के होते हुए भी ? किसी ने रोका नहीं, धिक्कारा नहीं मौन रहे, यानि दुर्योधन और दु:शासन की काली करतूतों का समर्थन ही किया। बात गले नहीं उतरी। सच बात जानने के लिये कृष्णा से मिलना होगा। घोर अपमान से कुचली हुई सर्पिनी ने सम्पूर्ण घटनाक्रम और वार्तालाप सखा कृष्ण को सुना दिया। पांडवों की मनोकामना-संधि के विपरीत अपनी दृढ़ कामना भी प्रकट कर दी। महाराज महाबली द्रुपद की पुत्र, महारथी धृष्टद्युम्न की बहन, अद्वितीय और अनुपम कृष्ण की सखि को युद्ध चाहिए, वह भी कौरवों के समूल विनाश के साथ। कृष्ण के सब संशय मिट गए। वार्तालाप समझाइश आदि से कुछ नहीं होगा वहां तो पूरे कुए में भांग पड़ी है। समझ में आई रूपसी, बुद्धिमती कृष्णा की महत्ता।

जो यह मानते है कि धर्मराज युधिष्ठिर अथवा अर्जुन ही के साथ कृष्णा का विवाह हुआ, वे मूलभूत त्रुटि करते है।

1. युधिष्ठिर ने द्यूत सभा में यह नहीं कहा कि कृष्णा मेरी पत्नि है और इसे दांव पर लगाने का मुझे अधिकार है। इसके विपरीत अत्यधिक क्रोधित भीम ने सहदेव से कहा कि आग ले आओ, इसके वह हाथ जला देता हूँ जिनसे द्रौपदी को दांव पर लगाया था। क्या भीम की इस स्वत:प्रेरित त्वरित प्रतिक्रिया से यह ध्वनित नहीं होता कि द्रौपदी अकेले युधिष्ठिर की पत्नि नहीं थी ?

2. यदि अर्जुन के साथ द्रौपदी के विवाह को माने तो युधिष्ठिर की ''धर्मराज'' छवि का मटियामेट हो जाता है। वीर्यशुल्का द्रौपदी द्वारा जयमाला-वरमाला पहनाने से विवाह का 90 प्रतिशत कार्य समाप्त हो जाता है ! शेष संस्कार तो औपचारिकता मात्र रह गया था। इन परिस्थितियों में छोटे भाई की पत्नि से युधिष्ठिर का विवाह ''अपहरण'' कहलायेगा। अर्जुन से विवाह के पश्चात् द्यूत सभा में द्रौपदी को दाँव पर लगाने का कोई औचित्व ही नहीं बनता।

3. खांडव वन में और एक वर्ष के अज्ञातवास की अवधि में केवल द्रौपदी ही पाण्डवों के साथ गई थी। अन्य विवाहिता पत्नियां अपने-अपने मायके चली गई थी।

4. अश्वत्थामा द्वारा रात में पांडव पक्ष का सर्वनाश करने पर उसने एक बार नहीं, अनेक बार कहा कि उसने द्रौपदी के सभी पुत्रों को मार डाला है। यह नहीं कहा कि युधिष्ठिर के सभी पांचों पुत्रों को मार डाला।

5. सबसे ठोस और अकाट्य प्रमाण यह है कि हिमालय की यात्रा में, बर्फ में शरीर को गलाकर मारने की प्रक्रिया में पांचों पांडवों के साथ केवल द्रोपदी ही गई थी, किसी पांडव की और पत्नि नहीं।

उपरोक्त सभी विवरणों से यही निष्कर्ष निकलता है कि द्रौपदी ने स्वेच्छा से, परिस्थितियों से समझौता कर, मन से पांचों पांडवों को प्रति रूप में स्वीकार कर लिया था इसलिये वह सभी के साथ कुशलतापूर्वक निभा पाई। उनमें ईर्ष्या-द्वेष बढ़ने के स्थान पर सौहार्द बढ़ा। पांडवों के अन्य विवाह कर लेने पर भी ईर्ष्या-द्वेष की अग्नि अपनी सौतनों में नहीं जलने दी और न ही पांडवों पर उसकी पकड़ ढ़ीली हुई।

पुनश्च-उपरोक्त प्रकरण विवादित है, यह जानते हुए भी मैनें, इस अल्पमति ने उस पर अपने विचार प्रकट करने का साहस किया है। विद्वानों की प्रतिक्रिया से अपनी सुरक्षा करने के विचार से निम्न पाद टिप्पणियाँ प्रस्तुत करता हूँ-महाभारकालीन समाज में नर-नारी सम्बन्धों को लेकर विभिन्न उदाहरण उपलब्ध होते हैं जो यह सिद्ध करते है कि ये सम्बन्ध भी पूर्णतया बिखर चुके थे।

1. ऋषि पाराशर ने दाशराज की पुत्री सत्यवती से सहवास किया। फलस्वरूप सन्तान उत्पन्न हुई जिसे हम महाभारत के रचयिता भगवान वेदव्यास के नाम से जानते हैं। ऋषि पदवी से विभूषित व्यक्ति के इस आचरण का क्या औचित्य है ?

2. कौरव नरेश शान्तनु इसी सत्यवती के रूप जाल में फंसे। युवराज देवव्रत को भीष्म प्रतिज्ञा कर न केवल राज ही त्यागना पड़ा बल्कि जीवन भर अविवाहित रहने का प्रण करना पड़ा। उच्चकुल परम्परा का सम्राट शान्तनु इतना कामान्ध हो गया कि युवा पुत्र का जीवन नष्ट करते हुए उसे लज्जा भी नहीं आई।

3. सत्यवती ने अपनी सन्तान युवराज विचित्रवीर्य के क्षय/पीलीयारोगग्रस्त होने के कारण ऋषि पाराशर से उत्पन्न अपने पुत्र वेदव्यास को अम्बिका और अम्बालिका से नियोग (सहवास) कर सन्तान उत्पन्न करने की आज्ञा दी। ऋषि होते हुए भी वेदव्यास ऋषियों के लिये वर्जित इस काम को करने के लिये तैयार हो गए।

4. अम्बिका अम्बालिका और अम्बिका की दासी से वेदव्यास ने क्रमश: धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर उत्पन्न किए। धृतराष्ट्र-जन्मांध, पाण्डु-पीलिया या क्षय रोगग्रस्त और विदुर-दासी पुत्र।

5. जन्मान्ध धृतराष्ट्र राजा नहीं हो सकता था। पाण्डु राजा हुए और पीलिया अथवा क्षयरोग से ग्रस्त होने के कारण सन्तान उत्पन्न करने में सर्वथा असमर्थ रहे। पाण्डु की दो पत्नि थी कुन्ती और माद्री, कुन्ती कौमार्य अवस्था में ही संसर्ग कर कर्ण को जन्म दे चुकी थी। पाण्डु के असमर्थ होने के कारण उसने तीन पुरूषों से पृथक-पृथक संसर्ग किया और युधिष्ठिर भीम और अर्जुन उत्पन्न किए। इसी नियोग प्रक्रिया के फलस्वरूप माद्री को नकुल और सहदेव पुत्र मिले। यह कथा रही कुरूवंश में नारियों की स्थिति की। ऐसे में किसी भी कारण से कुन्ती का पांचों पांडवों से कृष्णा (द्रौपदी) का विवाह कराने के लिये आग्रह करना व सहमति देना आश्चर्यजनक नहीं लगता। कुन्ती ने तो नियोगार्थ अज्ञात अपरिचित तीन पुरूषों को अपना शरीर सौंपा कृष्णा तो विधिवत विवाह कर पांचों की अर्द्धांगिनी बनी, स्वेच्छा से। स्वेच्छा नहीं होती तो किसी में इतना सामर्थ्य नहीं था कि उसे जोर-जबरदस्ती पांचों से विवाह करना पड़ता। योगेश्वर कृष्ण और ऋषिवर वेद व्यास स्वयंवर में उपस्थित थे योगेश्वर कृष्ण पूर्णतया कुशल राजनीतिज्ञ थे। उनके दो लक्ष्य थे पांडवों की पुर्नस्थापना और धर्म राज्य की स्थापना। श्रीकृष्ण ने आपदकाल में रूकमणी का अपहरण कर उससे विवाह किया। फिर सत्यभामा और जाम्बवती से विवाह किया। रूकमणि को तो 12 वर्ष तपस्या कराकर प्रद्युम्न सुपुत्र दिया। बाकी दोनों की सन्तानें हुई या नहीं, विवरण मुझे ज्ञात नहीं है। इस पृष्ठभूमि में एक पाण्डव से वह भी युधिष्ठिर से 'कृष्णा' का विवाह कराकर विद्वतजन किस शुचिता का या वैदिक परम्परा का महिमामण्डन करना चाहते हैं, मेरी समझ में नहीं आता। यदि यह विवाह केवल अर्जुन से ही हुआ था, तो इतनी माथा-पच्ची की जरूरत ही नहीं थी। युधिष्ठिर अथवा भीम का कृष्णा से विवाह का दावा ही खोखला था और प्रथम दृष्टि में ही कुन्ती के द्वारा खारिज हो जाना चाहिए था।

पृष्ठ 4 का शेष-महर्षि विश्व.....

उनके आविर्भाव से पूर्व हिन्दुओं का अन्य मतों में लोभ, बलप्रयोग, छल व कपट आदि से धर्मान्तरण होता था। महर्षि दयानन्द ने वेदों के आधार पर हिन्दू धर्म को सत्य व ज्ञान पर प्रतिष्ठित किया तथा अन्य मतों की समीक्षा कर उनमें विद्यमान अज्ञान व अन्धविश्वासों की ओर ध्यान दिलाया जिससे एकपक्षीय धर्मान्तरण समाप्त हुआ और अन्य मत के लोग भी सहर्ष आर्य धर्म को स्वीकार करने लगे। भारतीय समाज से अज्ञान, अन्धविश्वास, सामाजिक विषमतायें दूर हुई जिससे मनुष्य परस्पर संगठित होकर वैदिक धर्म के अनुसार ईश्वरोपासना, यज्ञ हवन आदि करने लगे व माता-पिता-आचार्य आदि का सम्मान करने की प्रेरणा सबको प्राप्त हुई। मांसाहार के दुगुर्णों व हानियों से भी लोग परिचित हुए तथा बड़ी संख्या में लोगों ने इसे त्याग दिया। उनके प्रचार व प्रयत्नों से शाकाहार में वृद्धि हुई। गोदुग्ध व गोघृत की महिमा में भी वृद्धि हुई। भारतीयता व प्राचीन भारत का गौरव महर्षि दयानन्द के कार्यों से न केवल देश में ही अपितु विदेशों में भी बढ़ा। ऐसे अनेकानेक कार्य महर्षि दयानन्द जी ने किये जिससे देश को अपूर्व लाभ हुओ और उन्नति हुई।

महर्षि के प्रचार से सभी मतों के लोग उनके विरोधी व शत्रु बन गये थे। एक षडयन्त्र के अन्तर्गत जोधपुर में उनको विष देकर उनका जीवन समाप्त कर दिया गया। दीपावली के दिन अजमेर में सूर्यास्त के समय उन्होंने अपने प्राणों को ईश्वर की स्तुति, प्रार्तना एवं उपासना करते हुए स्वेच्छा से त्याग दिया। महर्षि दयानन्द ने वेदों के ज्ञान को प्राप्त कर पुन: संसार को उपलब्ध कराया व ईश्वर तथा जीवात्मा आदि के सत्य स्वरूप से परिचय व ईश्वर उपासना की सच्ची पद्धति हमें बताई। दीपावली पर उनके बलिदान पर्व पर हम उनको अपनी हृदय के प्रेम से सिक्त श्रद्धाजंलि प्रस्तुत करते हैं। उनके अपूर्व कार्यों से मानवता लाभान्वित हुई है, अत: सारा संसार उनका ऋणी है। उनका यश व कीर्ति चिरस्थाई रहेगी।

आर्य समाज तलवाड़ा का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज तलवाड़ा का वार्षिकोत्सव 23 अक्तूबर से 25 अक्तूबर तक बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया गया जिसमें श्री विजय कुमार जी शास्त्री महोपदेशक और श्री नारायण सिंह जी महोपदेशक और श्री अरुण कुमार जी भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब इन तीनों ने बहुत ही अच्छे ढंग से प्रचार किया है। बड़ी संख्या में लोगों ने इनके विचारों को सुना और बहुत प्रसन्न हुए। 23.10.15 को शाम के 8.30 बजे श्री अरुण कुमार जी के भजन हुए। 9 बजे से श्री नारायण सिंह जी महोपदेशक के विचार आरम्भ हुए। श्री नारायण सिंह जी ने बहुत ही ज्ञान वर्द्धक विचार दिए। 24.10.15 को प्रात: 7.30 बजे से 8.30 बजे तक हवन यज्ञ हुआ। यज्ञ के पश्चात् श्री नारायण सिंह जी का प्रवचन हुआ। सदस्य बड़ी संख्या में हवन यज्ञ में आए और पण्डित जी के विचार सुने और प्रसन्न हुए। 24.10.15 शाम के 8 बजे श्री अरुण कुमार जी के भजन हुए। भजनों के पश्चात् श्री पण्डित नारायण सिंह जी का प्रवचन हुआ। उनके बाद श्री पण्डित विजय कुमार जी शास्त्री जी के विचार सभी ने ध्यानपूर्वक सुने। उनके बाद श्री स्वामी सदानन्द जी अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर उनका प्रवचन हुआ। बहुत ही प्रभाव लोगों पर उनके प्रवचनों का हुआ। करनाल हरियाणा से श्री रमेश चन्द्र जी भाटिया पूर्व प्रधान आर्य समाज तलवाड़ा परिवार सहित आर्य समाज में आए हुए थे। श्री किशोरी लाल जी पूर्व मन्त्री आर्य समाज तलवाड़ा, भी पहुंचे हुए थे। 25.10.15 प्रात: 8 बजे से 9.30 बजे तक हवन यज्ञ श्री विजय कुमार जी शास्त्री, श्री पण्डित नरायण सिंह जी ने बड़ी श्रद्धापूर्वक कराया। यज्ञ में बहुत लोगों ने भाग लिया। यज्ञ के पश्चात् प्रातराश किया गया। 10.30 बजे से 11.00 बजे तक अरुण जी के भजन हुए। 11 बजे से 12 बजे तक श्री नारायण सिंह जी का प्रवचन हुआ। 12 बजे से लेकर 1 बजे तक श्री विजय कुमार जी शास्त्री जी के विचार बहुत ज्ञानवर्द्धक हुए। 1 बजे शान्ति पाठ के पश्चात ऋषि भोजन का प्रबन्ध सभी लोगों ने भोजन किया। यह कार्यक्रम बहुत ही ज्ञानवर्द्धक रहा। **-पुरोहित परमानन्द आर्य**

छहरटा में वेद प्रचार

अमृतसर के करीब कस्बा छहरटा में श्री सुमेश कपूर जी के निवास स्थान इनसाइट यूनिवर्सल स्क्रू फैक्ट्री, जी. डी. रोड छहरटा, अमृतसर पर 8 नवम्बर 2015 को चारों वेदों के शतकों का पाठ किया गया। इस कार्यक्रम के ब्रह्मा स्वामी दिव्यानन्द जी हरिद्वार थे। मुख्य यजमान श्री सुमेश कपूर एवं सलील कपूर बने। इस अवसर पर स्वामी दिव्यानन्द जी हरिद्वार, श्री विजय कुमार जी शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वेदों पर प्रभावशाली प्रवचन हुए। श्री राजेन्द्र व्रत जी भजनोपदेशक के मधुर भजनों ने लोगों को बांधे रखा। दयानन्द मठ दीनानगर के ब्रह्मचारी ने वेद पाठ किया। इस समारोह में श्री इन्द्रपाल आर्य प्रधान आर्य समाज लक्ष्मणसर, श्री राकेश मेहरा जी मंत्री केन्द्रीय सभा अमृतसर, प्रो. अरुण महाजन प्रधान आर्य समाज लारेंस रोड अमृतसर, बाल किशन जी आर्य समाज नवांकोट अमृतसर, श्री मेला राम जी आर्य समाज हरिपुरा, श्री इन्द्रजीत ठुकराल आर्य समाज पुतलीघर अमृतसर, प्रो. विनोद पाल जी, श्री जुगल किशोर जी, पंडित सोमदेव शास्त्री विशेष रूप से पधारे। इस कार्यक्रम में दूसरी आर्य समाजों के महानुभाव भी पधारे हुए थे। श्रीमती शशि कपिला जी प्रधाना हरियाणा जिला होशियारपुर में इस मौके पर विशेष रूप से पधारे।

आर्य समाज बंगा का वार्षिक उत्सव

आपको यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि आर्य समाज बंगा का 34वां वार्षिकोत्सव दिनांक 19 नवम्बर वीरवार से 22 नवम्बर रविवार 2015 तक आर्य समाज मन्दिर में मनाया जा रहा है। इस उत्सव में आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य रामानन्द शिमला, डॉ. स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती मथुरा, श्री सुरेश शास्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, ब्रह्मचारी सोमवीर आर्य दिल्ली एवं पं. सुखपाल आर्य भजनोपदेशक सहारनपुर पधार रहे हैं। जो अपने मुखारविन्द से जीवन कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेंगे। प्रार्थना है कि सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित पधार कर धर्मलाभ उठाएं। **-नरेन्द्र गोगना मन्त्री आर्य समाज**

ऋषि निर्वाण दिवस मनाया

16.11.15 को दयानन्द पब्लिक स्कूल में ऋषि निर्वाण दिवस, दिवाली व बाल दिवस के उपलक्ष्य में हवन का आयोजन किया गया। हवन पंडित योगराज शास्त्री जी ने करवाया जिसमें स्कूल के सभी अध्यापकों व विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस अवसर पर कुछ कमेटी मैम्बर्स भी उपस्थित थे। शास्त्री जी ने बच्चों को बताया कि हवन करने से हमें क्या-क्या लाभ होते हैं ? हमें हवन प्रतिदिन क्यों करना चाहिए ? हवन के पश्चात् दसवीं कक्षा की पलक, तलत, संगीता ने गायत्री मंत्रों को डांस के द्वारा प्रस्तुत किया। इसके पश्चात् आर्य समाज के दस नियम कौन-कौन से हैं उस पर एक प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया था। इसमें फर्स्ट, सैकिंड, थर्ड आने वाले बच्चों को मैडल देकर सम्मानित किया गया। पांचवी कक्षा की रजना ने ऋषि दयानन्द जी पर भजन (कर गया भारत का बेड़ा पार इक मस्ताना योगी) गाकर सबका मन मोह लिया। इसी प्रकार शशांक, दानवी, लवप्रीत वगैरहा सभी बच्चों ने पंडित जवाहर लाल नेहरू जी, ऋषि जी व बाल दिवस पर गीत व स्पीच दी व भजन सुनाए। इसी के साथ छोटे बच्चों ने दादी अम्मा गाकर सभी का मन मोह लिया। इस अवसर पर स्कूल के प्रधान श्री सन्त कुमार जी ने अपने भाषण में आए हुए सभी सज्जनों का धन्यवाद किया और बच्चों को देश का अच्छा नागरिक बनने व अपनी पढ़ाई की तरफ ध्यान देने के लिए कहा। इसी प्रकार श्री विजय सरीन जी ने भी बच्चों को दिवाली की शुभकामनाएं दी और अपने जीवन में निरन्तर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। श्री गोपाल कृष्ण अग्रवाल जी ने भी बच्चों को खूब मेहनत से पढ़ाई करने व अपने में कांफिडैंस पैदा करने के लिए प्रेरित किया। स्कूल की प्रिंसीपल श्रीमती सुनीता मलिक ने बच्चों को व आए हुए सभी मैंबर्स व मेहमानों को दीवाली की शुभकामनाएं दी व सभी का इस फंक्शन में आने के लिए धन्यवाद किया। इस अवसर पर श्रीमती शुभ लता जी भी उपस्थित थी। इस अवसर पर स्कूल के कमेटी मैंबर्स में शान्ति लाल चुघ, रमाकान्त महाजन, अरुण सूद जी ने स्कूल के सभी बच्चों के लिए टी शर्टस गिफ्ट में दीं जो कि सभी बच्चों में बांट दी गई। इस अवसर पर दीपल जिन्दल व राजीव जैन भी उपस्थित थे। शान्ति पाठ के पश्चात् सबको यज्ञशेष बांटा गया व इस प्रकार समारोह की समाप्ति हुई।

आर्य समाज नवांकोट अमृतसर का चुनाव

श्री विनोद मदान जो की अध्यक्षता में आर्य समाज नवांकोट का चुनाव सम्पन्न हुआ जिसमें डा. प्रकाश चन्द जी को सर्व सम्मति से तीन वर्ष के लिए प्रधान चुन लिया गया। प्रधान जी ने अपनी टीम का गठन इस प्रकार किया-

प्रधान-डा० प्रकाश चन्द आर्य, उप-प्रधान-श्री विजय आनन्द, उप-प्रधान-डा० राजेश शर्मा, मन्त्री-पंडित बनारसी दास आर्य, उप-मन्त्री-श्री बाल किशन एडवोकेट, उप-मन्त्री-श्री कीमती लाल आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री लक्ष्मण कुमार तिवारी, सह-कोषाध्यक्ष-श्री हरविन्द्र कुमार आर्य, वेद प्रचार मन्त्री-निर्मल आर्य, सुदेश आर्य, शकुन्तला आर्य, वेद प्रचार व योग शिक्षक-श्री विनोद मदान, पुस्तकालय-पंडित बनारसी दास आर्य, प्रैस सचिव-श्री बाल किशन आर्य, सेवक-श्री हरजिन्द्र सिंह, धनी राम।

इसके अतिरिक्त 15 सदस्य अंतरंग सभा में लिए गए। सभी ने करतल ध्वनि से चुनाव का स्वागत किया। **-प्रधान-डा० प्रकाश चन्द**

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस मनाया गया

स्वामी कृष्णानन्द सरस्वती जी के द्वारा स्वामी आयुर्वेदिक आश्रम बंडाला, नजदीक गोराया में नए आश्रम के उपलक्ष्य में ऋषि निर्वाणोत्सव दिवस पर यज्ञ कराया गया। सर्वप्रथम यज्ञ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा पं. विजय कुमार शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब थे। मुख्य यजमान सरदार मक्खन सिंह एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती दलजीत कौर परिवार सहित तथा श्री रविन्द्र सच्चर जी थे। यज्ञ के पश्चात श्री अरूण वेदालंकार जी के मधुर भजन हुए। डी.ए.वी. स्कूल बिलगा के संगीत अध्यापकों द्वारा भी भजन गाए गए। भजनों के पश्चात पं. विजय कुमार शास्त्री जी का प्रवचन हुआ। इसके पश्चात झण्डे की रस्म डी.ए.वी. स्कूल बिलगा के प्रिं. श्री रवि शर्मा द्वारा अदा की गई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि अमेरिका से श्रीमती कान्ता देवी आर्या, जालन्धर से श्री रवि चौहान थे। इसके अलावा बिलगा, नूरमहल, गोराया, जंड़ियाला, फिल्लौर, लुधियाना एवं जालन्धर से भी गणमान्य व्यक्ति परिवार सहित पधारे। अन्त में ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

आर्य समाज गौ हत्या का विरोध करता है

वर्तमान समय में छिड़ी गौ हत्या या गौ मांस की बहस भयंानक रूप लेती जा रही है नित्य कोई न कोई चर्चा पक्ष-विपक्ष में होती रहती है। इस विषय में कुछ तथाकथित विद्वान टीवी चैनलों या मीडिया में वेदादि शांस्त्रों के झूठे प्रमाण बोल देते है कि वेदों में मांस भक्षण लिखा है इस विषय में आर्य समाज डंके की चोट पर कहता है कि किसी वेद में गौ मांस या मांस खाने का प्रसंग नहीं है। वेदों में तो स्पष्ट कहा है ''गां मा हिंसी'' गाय की हिंसा मत करो ''अश्वं मा हिंसी'' घोड़ों की हिंसा मत करो, ''अजां मा हिंसी'' बकरों की हिंसा मत करो। ''मा मा हिंसी'' किसी जीव की हिंसा मत करो। यजुर्वेद ! कुछ विद्वान यजुर्वेद में आए गौ मेध यज्ञ, अवश्मेघ यज्ञ, पितृ मेध सर्व मेध यज्ञों का हवाला देकर वेदों में गौ हत्या का झूठा प्रमाण देते रहते हैं, वे ये बताएं कि मेध का अर्थ यदि आहुति है तो पितृ में अपने माता पिता की आहुति दोगे क्या ? वेदों में मेध शब्द का अर्थ रक्षा है अत: गाय आदि पशु पक्षियों की रक्षा करनी चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती जो वेदों के विद्वान और भाष्यकार है उनकी मान्यता है कि गाय की हत्या नहीं करनी चाहिए क्योंकि गाय अपने जीवन में लगभग 1300 मनुष्यों का पेट दूध घी और औषधियों से भर देती है। ऋग्वेद के मंडल 8, सूक्त 10 मंत्र 1-15 में परमात्मा का आदेश है कि हे ! मनुष्य तू गौ की हत्या मत कर यह तो अमृता का केन्द्र है।

अत: समस्त आर्य समाजें गौ हत्या का घोर विरोध करती है और गौ पालन का समर्थन। **-राकेश मेहरा महामन्त्री**

आर्यसमाज पार्क लेन लुधियाना का विशेष कार्यक्रम

आर्य समाज पार्क-लेन लुधियाना का वर्ष 2015 का विशेष कार्यक्रम दयानन्द पब्लिक स्कूल, लुधियाना में 1-11-2015 रविवार सायं बड़ी श्रद्धा व उत्साह के साथ मनाया गया। कार्य क्रम का शुभारम्भ तीन कुंडीय यज्ञ से किया गया जिसे पं० कर्मवीर शास्त्री जी ने सम्पन्न कराया। श्रीमती एवं श्री संजीव चड्डा, सुरिन्द्र कुमार, कृष्ण कुमार गुप्ता, अजय महाजन, ओम प्रकाश गुप्ता, विकास बत्रा, दीपक चोपड़ा जी ने यजमान-पद ग्रहण कर बड़ी श्रद्धा से यज्ञ में आहुतियां अर्पित की। यज्ञ के उपरान्त श्रीमती अनु गुप्ता जी ने प्रभु भक्ति का भजन ''क्यों भूलता ओ बन्दे, तूं ओ३म् नाम गा ले, तूं ओ३म् नाम गाले, जीवन सफल बना ले तथा श्री अनिल कुमार जी ने ''तेरे ही गीत यह मन गाए, सुख में भी दु:ख में भी'' सुनाया। बहिन जनक रानी आर्य ने अपना प्रिय भजन ''स्वासां दी माला नाल सिमरां मैं तेरा नां गाया, सभी श्रोताओं ने उनका साथ दिया।

श्री श्रवण कुमार बत्रा जी ने वैदिक विनय से आज के मंत्र 'पाप को वश में करने से सुख प्राप्ति पर अपने विचार प्रकट किए। गुरुकुल शुक्रताल से विशेष रूप से पधारे आचार्य पवन वीर जी ने अपने सार गर्भित प्रवचन में कहा कि केवल मात्र परमात्मा ही हमारी स्तुति का योग-पात्र है और वही हमारा सच्चा मित्र है, जिसके समीप बैठकर ही हमें सुख व आनन्द की प्राप्ति हो सकती है। विद्वानों के संग व स्वाध्याय द्वारा उसको जानकर, निरन्तर उस के साथ जुड़े रहना चाहिए।'

डॉ० विजय सरीन जी ने परम पिता परमात्मा का उत्सव की सफलता के लिए धन्यवाद करने के पश्चात् सभी विद्वानों सर्व श्री आचार्य पवन वीर पं० कर्म वीर, रमेश कुमार, राजेन्द्र कुमार तथा भिन्न-भिन्न आर्य समाजों व स्त्री समाजों तथा अन्य गणा-मान्य उपस्थित जनों का धन्यवाद किया। शांति पाठ व जय-घोष के पश्चात् प्रसाद का वितरण किया गया। **-विजय सरीन**

फोकल प्वाईंट लुधियाना का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज मन्दिर फेस-1 फोकल प्वाईंट जमालपुर लुधियाना का 36 वां वार्षिक उत्सव 20 नवम्बर शुक्रवार से 22 नवम्बर 2015 रविवार तक बड़े उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आचार्य श्री हरिप्रसाद जी वैदिक प्रवक्ता दिल्ली के प्रवचन तथा श्री राजेश प्रेमी जालन्धर, श्रीमती गुरमीत कौर लुधियाना, श्री वीरेन्द्र-योगेन्द्र आर्य समाज फोकल प्वाईंट के मधुर भजन होंगे। यज्ञ के ब्रह्मा आर्य समाज के पुरोहित श्री महेश वाचस्पति जी होंगे। आप सभी महानुभावों से प्रार्थना है कि परिवार सहित उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना योगदान दें। **-महेन्द्र प्रताप आर्य उपप्रधान आर्य समाज**

वैदिक एवं अधुनिक भौतिक विज्ञान चिन्तन शिविर सम्पन्न

दिनांक 16,17 वा 18 अक्टूबर 2015 को वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम, भीनमाल (राज.) में त्रिदिवसीय शिविर सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर शिविर संचालक व मुख्य वक्ता आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक ने कहा कि हमारे ऐतरेय ब्राह्मण के वैज्ञानिक व्याख्यान के द्वारा विश्व के विकसित भौतिक विज्ञान को नई दिशा मिलेगी। उन्होंने कहा कि प्राचीन ऋषि. मुनि, देव आदि जहाँ उच्च कोटि के भौतिक वैज्ञानिक थे, वहीं वे उच्च कोटि के योगी भी थे। इन दोनों ही विज्ञानों के कारण हमारा देश जगद्गुरु एवं चक्रवर्ती सम्राट् था। आचार्य ने वैदिक भौतिक विज्ञान के कई गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करके वैदिक विद्वानों तथा भारत के कई प्रान्तों से आये आर्य प्रबुद्ध नागरिकों को विस्मित कर दिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि पूर्व पुलिस महानिरीक्षक एवं राजीव गांधी जनजाति विश्वविद्यवालय, उदयपुर के कुलपति प्रो. टी. सी. डामोर ने आशा व्यक्त की कि आचार्य के वैज्ञानिक शोध कार्य से वेद विज्ञान मन्दिर को आर्य समाज के बाहर अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक ख्याति मिलेगी। डामोर ने सभी से आचार्य को हर सम्भव सहयोग देने की अपील की। इस अवसर पर स्वामी डा. ओम् आनन्द सरस्वती चितौड़गढ़ ने कहा कि अग्निव्रत जी का कार्य आर्य समाज की सीमा से बाहर निकलकर विश्व में फैलना चाहिए। उन्होंने आचार्य अग्निव्रत के ऐतरेय ब्राह्मण के वैज्ञानिक व्याख्यान को कैम्ब्रिज, ऑक्सफोर्ड जैसे विश्वविख्यात विश्वविद्यालयों से प्रकाशित कराना चाहिए। प्रौढ़ वैदिक विद्वान् आचार्य प्रदीप शास्त्री, करनाल, हरियाणा ने इस शोध कार्य को लम्बे काल खण्ड के पश्चात् पुन: वैदिक विज्ञान की शोध प्रक्रिया का उदय बताया। स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, अलीगढ़, आचार्य कर्मवीर मेधार्थी, हरियाणा, आचार्या पवित्रा विद्यालंकार, हाथरस एवं डॉ. सीमा श्रीमाली, चितौड़गढ़ ने इस कार्य को सम्पूर्ण आर्य जगत् में अद्भुत् बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी वेदानन्द सरस्वती, उत्तराकाशी ने की। उन्होंने आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक के शोध कार्य को हजारों वर्षों से लुप्त वैदिक विज्ञान शोध की परम्परा को पुनर्जीवित करने वाला महान् कार्य बताया। इस अवसर पर श्री अशोक आर्य, उदयपुर ने आचार्य जी के शोध कार्य के विषय में कहा कि आर्य जगत् भले ही इस कार्य का मूल्य न समझ पाये परन्तु संसार का प्रबुद्ध जगत् इस महान् कार्य को अवश्य समझेगा। इस कारण इसका अंग्रेजी भाषा के माध्यम से विश्वव्यापी प्रचार होना चाहिए। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, राज सरकार के पूर्व मंत्री अर्जुनसिंह देवड़ा, प्रबुद्ध नागरिक तथा भारी संख्या में आर्यजन एवं भीनमाल क्षेत्र के प्रतिष्ठित जन उपस्थित थे। पं. केशवदेव शर्मा, सुमेरपुर के सुमधुर भजनों की सरिता निरन्तर बहती रही। **-डा. पदमसिंह चौहान**

महर्षि का निर्वाण दिवस मनाया

आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकण्डरी स्कूल पुराना बाजार में आज महर्षि दयानन्द जी का निर्वाण दिवस मनाया गया। उस उपलक्ष्य पर विद्यालय में गायत्री व वैदिक मन्त्रों के साथ हवन करवाया गया। बाद में स्वामी दयानन्द जी के जीवन व उपदेशों पर स्कूल के बच्चों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम पेश किया गया। उस अवसर पर विद्यालय की प्रबंधकर्ता सभा की मैनेजर श्रीमती राजेश शर्मा जी व प्रधान श्री सुशील मोदगिल जी भी उपस्थित हुए। राजेश शर्मा जी ने स्वामी दयानन्द जी के जीवन की घटनाओं से बच्चों को प्रेरित किया। विद्यालय की प्रिंसीपल श्रीमती ज्योति किरण शर्मा जी ने भी स्वामी जी के उपदेशों से बच्चों को अवगत करवाया।

ऋषि दयानन्द निर्वाण दिवस मनाया गया

आर्य समाज मन्दिर शहीद भगत सिंह नगर–जालन्धर में ऋषि निर्वाण दिवस एवं दीपावली पर्व बड़े हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया गया जिसमें मुख्य यजमानों श्री कुमार महाजन, चमन लाल एवं सरदार हरविन्दर सिंह बेदी परिवार सहित यजमान बनें। पं. शिवा शास्त्री ने सभी यजमानों से आहुतियां डलवाई। इसके बाद आर्य समाज की भजन गायिका सोनू भारती ने ऋषि की गाथा व मधुर भजन सुनाकर सभी को भाव विभोर कर दिया। इसके बाद पं. शिवा शास्त्री ने कहा कि श्रीराम ने अपने पिता के वचन का पालन करते हुए 14 वर्ष का वनवास काटा था और अत्याचारी रावण का वध किया था। आर्य समाज के मन्त्री श्री रणजीत आर्य ने महर्षि के जीवन के विषय में बताते हुए कहा कि महर्षि जैसा तेजस्वी, महाज्ञानी, महातपस्वी, स्त्री उद्धारक, अखण्ड ब्रह्मचारी, युग प्रवर्तक आज ही के दिन कार्तिक अमावस्या सम्वत् 1940 को इस संसार से विदा हुए थे। महर्षि दयानन्द ने वेद रूपी सूर्य के प्रकाश से सारे संसार को प्रकाशित किया। सत्य–असत्य के अन्वेषण का भूषण न जाने किधर खो गया। ऋषि मुनियों की परम्परा का खुलता द्वार हमेशा के लिए ध्वस्त हो गया। कांच पिलाने वाले को भी आंच न आने पाए, उसको भी पैसा देकर बचाने वाले ऋषि ने आज आंखे बन्द कर ली और हमें छोड़कर चला गया। ऐसी जीवनी सुनाकर आर्य जी ने सभी की आंखों में पानी ला दिया। इस पावन पर्व पर यज्ञशाला में उपस्थित ईश्वर चन्द्र रामपाल, चौ. हरिचन्द, सुभाष आर्य, सुदर्शन आर्य, इन्दु आर्य, अनु आर्य, स्वर्ण शर्मा, विजय लक्ष्मी शर्मा, सुभाष मैहता, ओम प्रकाश मैहता, तिलक राज, बैजनाथ, कुबेर शर्मा, नन्दनी शर्मा, मुकेश कालिया, राजीव शर्मा, राजेन्द्र शर्मा, राकेश बावा, संगीता मल्होत्रा, सुनील मल्होत्रा, रमेश मुटरेजा, कमलेश कुमार, अश्विनी ड़ोगरा, रानी अरोड़ा, दिव्या आर्या, रविन्द्र आर्या, गंगा तिवारी, विनोद तिवारी, संगीता तिवारी, ऋतिक, पवन शुक्ला, उमा शुक्ला, अनिल मिश्रा, सान्या आर्या, अर्चना मिश्रा, सोनल महाजन, सुनीता महाजन, गौरव आर्य आदि शामिल थे।

–रणजीत आर्य मन्त्री आर्य समाज

ऋषि निर्वाण दिवस पर आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर की यज्ञशाला में हवन करते हुये आर्यजन।

वेदवाणी

दीनता त्यागपूर्वक जीवन में दृढ़ता

क्रत्वः समह दीनता प्रतीपं जगमा शुचे।
मृळा सुक्षत्र मृळय।। –ऋ० ७।८९।४

ऋषिः–वसिष्ठः।। **देवता**–वरुणः।। **छन्दः**–आर्षीगायत्री।।

विनय–हे मेरे तेजस्वी स्वामिन्! मुझ दीन की प्रार्थना सुनो। मैं इतना दीन हूं, इतना अशक्त हूं कि अपने कर्त्तव्य के विरुद्ध आचरण कर देता हूं। मैं जानता हुआ कि यह करना नहीं चाहिए, फिर भी कर देता हूं। मैं कई शुभ संकल्प करता हूं कि आज से नित्य व्यायाम करूंगा, नित्य सन्ध्या करूंगा, पर दीनतावश इन्हें निभा नहीं सकता। हृदय में कई अच्छी–अच्छी प्रज्ञाएं (बुद्धियां) स्थान पाती हैं, पर झूठे लोक–लाज के वश में उन पर अमल करना शुरू नहीं करता। उनके विरुद्ध ही चलता जाता हूं। यह मैं जानता होता हूं कि मेरा 'क्रतु' क्या है–कर्त्तव्य कर्म क्या है, अन्दर से दिल कहता जाता है कि तू उल्टे मार्ग पर चला जा रहा है, फिर भी मैं दुर्बल किसी भय का मारा हुआ, उसी उल्टे मार्ग पर चलता जाता हूं। हे दीप्यमान देव! हे मेरे स्वामिन्! तू मुझे वह तेज क्यों नहीं देता जिससे मैं निर्भय होकर अपने कर्त्तव्य पर डटा रहूं, किसी के कहने से या हंसी उड़ाने से उल्टा आचरण करने को प्रवृत्त न होऊं, किसी क्लेश से डरकर अपने 'क्रतु' को न छोड़ूं। मुझे यह अवस्था बड़ी प्रिय लगती है, परन्तु दीनतावश मैं इस अवस्था को प्राप्त नहीं कर रहा हूं। हे 'सुक्षत्र'! हे शुभ बलवाले! मुझे अदीन बना दे। मैं दीनता का मारा हुआ तेरी शरण आया हूं। इस दीनता के कारण मुझसे सदा उल्टे काम होते रहते हैं और मेरा अन्तरात्मा मुझे कोसता रहता है, इसलिए मैं सदा बेचैन रहता हूं। हे प्रभो! मुझे सुखी कर। मुझमें तेज देकर मेरी बेचैनी दूर कर। इस अशक्तता के कारण मैं जीवन में पग–पग पर असफल हो रहा हूं–मेरा जीवन बड़ा निकम्मा हुआ जा रहा है। हे प्रभो! क्या कभी मेरे वे सुख के दिन न आएंगे जब मैं अपने क्रतु पर दृढ़ रहा करूंगा, अपने संकल्पों पर अटल रहा करूंगा ? हे मेरे स्वामिन्! ऐसी शक्ति देकर अब मुझे सुखी कर दो, मुझे सुखी कर दो।

–वैदिक विनय से साभार

आर्य समाज फगवाड़ा का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज बंगा रोड़ फगवाड़ा का वार्षिक उत्सव दिनांक 20 नवम्बर से 22 नवम्बर 2015 तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर प्रसिद्ध विद्वान् श्री पं. ज्ञानेश्वर भारती जी यमुनानगर, पं. शान्तिस्वरूप जी वेद प्रचारक कनेड़ा विशेष रूप से पधार रहे हैं जो राष्ट्र एवं समाज के उद्धार के लिए अपने विचार रखेंगे। प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री पं. कुलदीप भास्कर जी करनाल एवं पं. दिनेश आर्य जी अमृतसर का संगीत का कार्यक्रम होगा। कार्यक्रम 20, 21 नवम्बर को प्रातः 8:00 से 9:45 तथा रात्रि 8:00 से 10:00 बजे तक होगा। मुख्य कार्यक्रम 22 नवम्बर रविवार को प्रातः 8:30 बजे से 2:00 बजे तक होगा। कार्यक्रम के पश्चात ऋषि लंगर का आयोजन होगा।

–देशबन्धु चोपड़ा मन्त्री आर्य समाज

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस एवं दीपावली पर्व मनाया

आर्य समाज जालन्धर छावनी में दीपावली पर्व एवं महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। सर्वप्रथम हवन यज्ञ हुआ जिसे श्री नन्द दुलाल वर्मा जी ने सम्पन्न कराया। इस यज्ञ में प्रधान श्री चन्द्र गुप्ता एवं श्रीमती प्रेम गुप्ता, श्री राकेश आर्य, श्री जवाहर लाल महाजन, श्री अशोक शर्मा, स्त्री आर्य समाज की श्रीमती सुदेश महाजन, श्रीमती सावित्री जी यज्ञ में यजमान बनें। के. एल. आर्य गर्ल्ज स्कूल के बच्चों ने भजन गाए। पं. तिलक राज शास्त्री जी का प्रवचन हुआ। के. एल. आर्य गर्ल्ज स्कूल की अध्यापिकाओं ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम के पश्चात प्रसाद वितरण किया गया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। मंच संचालन मन्त्री श्री जवाहर लाल महाजन जी ने किया।

–जवाहर लाल महाजन मन्त्री आर्य समाज

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।